eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Peer Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 01, April 2025

अभिनव गुप्त के दर्शन की प्रासंगकिता–ईश्वरप्रत्यभिज्ञादर्शन के परिप्रेक्ष्य में

डा० शुचि[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग) ला. म. प्र.व. बालिका महाविद्यालय, गोसाईंगंज, लखनऊ

Received: 01 April 2025 Accepted & Reviewed: 05 April 2025, Published: 30 April 2025

Abstract

आचार्य अभिनवगुप्त सम्पूर्ण भारतवर्ष की समस्त ज्ञान–विधाओं एवं साधनों की परंपराओं के समादृत आचार्य हैं, वे अद्वैत आगम एवं प्रत्यभिज्ञा दर्शन के प्रतिनिधि आचार्य तो है ही साथ ही उनमें विभिन्न ज्ञान–विधाओं का भी समन्वय है उनका व्यक्तिव अत्यन्त रहस्यमय है। महाभाष्य के रचयिता पतंजलि को व्याकरण के इतिहास तथा भामतीकार वाचस्पति मिश्र को अद्वैत वेदान्त के इतिहास में जो सम्मान तथा आदरणीय उत्कर्ष प्राप्त है वहीं सम्मान अभिनवगुप्त को तंत्र तथा अलंकारशास्त्र के इतिहास में प्राप्त है, इन्होंने रससिद्धान्त की मनोवैज्ञानिक व्याख्या कर अलंकार शास्त्र को दर्शन के उच्च स्तर पर प्रतिष्ठित किया तथा प्रत्यभिज्ञा और त्रिक दर्शनों को प्रौढ़ भाष्य प्रदान कर इन्हें तर्क की कसौटी पर व्यवस्थित किया।
कूट शब्द– अद्वैत, स्वातन्त्र्यवाद, षिवाद्वैतवाद, प्रत्यभिज्ञा दर्शन, अभिनव गुप्त

Introduction

काश्मीर शैव मत को प्रत्यभिज्ञा–दर्शन और त्रिक–दर्शन भी कहा जाता है। इसको स्वातत्र्यवाद, तथा शिवाद्वैत आदि नामों से भी जाना जाता है। वस्तुतः प्रत्यभिज्ञा का अर्थ है– स्वयं को विस्मृत के आवरणों से मुक्त कर स्वरूप को जानना अर्थात् **'शिवोऽहं'** की प्रतीति होना ही प्रत्यभिज्ञा है। प्रत्यभिज्ञा दर्शन के अनुसार यह विश्व छत्तीस तत्वों से मिलकर बना है। जिनको तीन भागों में विभक्त किया गया है– शिवतत्व, विद्या तत्व और आत्मतत्व। शिवतत्व के अन्तर्गत शिव और शिव शक्ति आते हैं।

विद्यातत्व के अन्तर्गत सदाशिव ईश्वर तथा शुद्धविद्या नामक तीन तत्व आते हैं। यह पांचों तत्व शुद्ध सृष्टि कहलाते हैं तथा यही समस्त तत्व क्रमिक रूप में परमशिव की चित् आनन्द इच्छा ज्ञान और क्रिया नामक पांच प्रमुख तत्वों से अभिव्यक्त होते हैं। चित् वह है जो अपने को सब आचरणों से ढककर भी सदा अनावृत बना रहता है समस्त परिवर्तनों के भीतर भी सदा परिवर्तन रहित बना रहता है। इसका स्वरूप प्रकाश–विमर्शमय है।

शंकर वेदान्त भी चित्र को अद्वैत मानता है परन्तु शंकर वेदान्त में चित् केवल प्रकाशमय है प्रत्यभिज्ञा दर्शन में वह प्रकाश विमर्शमय है। मणि भी प्रकाशरूप हैं केवल प्रकाशरूप कह देने मात्र से ही परम तत्व का निरुपण नहीं हो सकता है। प्रत्यभिज्ञा दर्षन के अनुसार परमतत्व वह प्रकाश है जिसे अपने प्रकाश का विमर्श भी है।

क्षेमराज ने विमर्श को "अकृत्रिममाहम इति विस्फुरणम्" अर्थात स्वाभाविक अहं रूपी स्फुरण कहा है। क्षेमराज जी का कथन है **"यदि निविमर्षः स्यात् अनीश्वरो जडश्च प्रसज्यते"** अर्थात यदि परम तत्व प्रकाश मात्र होता और विमर्षमय न होता तो वह निरीश्वर और जड़ हो जाता। चित् अपने को इस रूप में देखने

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2025

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Peer Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 01, April 2025

को ही विमर्श कहते है। इसी विमर्श को इस शास्त्र ने पराशक्ति, परावाक, स्वातन्त्र्य, ऐश्वर्य ,कृर्तत्य तथा स्पन्द इत्यादि नामों से भी अभिहित किया है।

परमतत्व विश्वोत्तीर्ण भी है और विश्वमय भी है। विश्व शिव की ही शक्ति की अभिव्यक्ति है। प्रलयावस्था में यह शक्ति शिव में एकत्रित रहती है। सृष्टि और स्थिति में यह शक्ति विश्वाकार में व्यक्त रहती है विश्व परमशिव से अभिन्न है यह शिव का स्फुरणमात्र है। परमशिव बिना किसी उपादान के, बिना किसी आधार के अपनी स्वेच्छा से अपनी ही भित्ति में विश्व का उन्मीलन करता है। जिस प्रकार चित्रकार कोई चित्र किसी अधार पर तुलिका और रंग की सहायता से बनाता है, उसी प्रकार इस जगत रूपी चित्र का चित्रकार आधार तुलिका तथा रंग आदि सब कुछ शिव ही है।

परमेश्वर ही मूल तत्व है। यह दर्शन ईश्वरयवाद इसीलिए कहलाता है कि परमेश्वर के अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं। अज्ञान या माया उससे भिन्न कुछ नहीं यह उसी का स्वेच्छानुसार परिगृहीत रूप है। वह स्वयं अपनी इच्छा से ही अपने को ढक भी लेता है और अपनी इच्छा से ही अपने को प्रकट भी करता है।

प्रत्यभिज्ञा दर्शन मे ये आत्मा अपने तात्विक शिव स्वरूप में पूर्णशक्ति में पूर्णशक्ति रूप है। आत्मा का अपने वास्तविक शिवस्वरुप का अज्ञान बन्धन है अपने वास्तविक स्वरुप की उपलब्धि मोक्ष है। अज्ञान का अर्थ ज्ञानाभाव न होकर अपूर्णज्ञान है। ज्ञान शक्तिरूप है अतः शक्ति की अपूर्णता बन्धन तथा पूर्णता मोक्ष है। यह अज्ञान आवरणमय है जो कम और मायवी मलों का आधार है। इस दर्शन में अज्ञान दो प्रकार का है– बौद्ध अज्ञान और पौरुष अज्ञान। बौद्ध अज्ञान बौद्धिक ज्ञान से दूर हो जाता है तथा पौरुष अज्ञान मूल अज्ञान है जो पुरुष को त्रिविध मलों से बाँधे रहता है।

यह पौरुष ज्ञान से ही हट सकता है। यह ज्ञान स्वरुप की पूर्णता का ज्ञान है जो अनुग्रह दीक्षा और साधना से प्राप्त होता है। शिव स्वयं स्वेच्छा से आत्मपरिसीमन द्वारा पशु बन जाते है और पुनः पूर्णता लाभ द्वार 'शिव' बन जाते हैं अर्थात बंधन और मोक्ष शिव की लीला है।

काश्मीर शैव दर्शन का दूसरा नाम प्रत्यभिज्ञादर्शन भी है। प्रत्यभिज्ञा मोक्ष–साधन है और स्वयं है मोक्ष रुप भी है। प्रत्यभिज्ञा के लिए चार बातें आवश्यक होती है, प्रथमः **प्रत्यभिज्ञात वस्तु या व्यक्ति का पूर्वज्ञान होना आवश्यक है**। द्वितीयः **उस पूर्वज्ञात वस्तु या व्यक्ति का वर्तमान में हमारे सम्मुख उपस्थित होना और हमें उनका प्रत्यक्षज्ञान होना आवश्यक है।**

तृतीयः **उस पूर्वज्ञान वस्तु या व्यक्ति के हमारे मन में स्थित संस्कारों का वर्तमान में देखकर जागृत होना आवश्यक है।** चतुर्थः **इन पूर्वज्ञान के उत्थित संस्कारों का वर्तमान में उत्पन्न प्रत्यक्षज्ञान से तादात्म्यीकरण आवश्यक है। इस तादात्म्यीकरण से उत्पन्न ज्ञान यह है कि वस्तु या व्यक्ति वही है जिसका हमें पूर्वज्ञान था, यही 'प्रत्यभिज्ञा' है।**

इस प्रकार **तत्त्वमसि** महावाक्य को भी यह दर्शन प्रत्यभिज्ञा द्वारा प्रकाशित करता है प्रत्यभिज्ञा जैसे दर्शन की कश्मीर ही पुण्य भूमि है। काश्मीर ओर प्रकारान्तर से प्रत्यभिज्ञा हमारे देश का प्रासंगिक जीवन दर्शन होना चाहिए तथा हमें अपनी शक्तियों की भी प्रत्यभिज्ञा होनी चाहिंए।

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2025

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Peer Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 01, April 2025

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. पराप्रवेशिका–आ. क्षेमेन्द्र, ईश्वर आश्रम ट्रस्ट निशात श्रीनगर कश्मीर

2. पराप्रवेशिका–आ. क्षेमेन्द्र, पृ०–2, श्रीकृष्णानन्द जी बुधौलिया वेदान्त शास्त्री दतिया (म०प्र०)

3. "सर्वो ममायं विभवः"–शिवरप्रत्यभिज्ञा दर्शन 4/1/12

4. निरुपादान सम्भारमभित्तावेव तन्वते जगचिच्त्रं नमस्तस्मै कलानाथाय शूलिने–"वसुगुप्त शिवसूत्र श्री पीताम्बरा पीठ संस्कृत परिषद्"

5. श्रीतंत्रश्लोक–1/23 डा० परमहंस मिन्द्र सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

6. काश्मीर शैव दर्शन– डा० कैलाशपति त्रिपाठी, अर्धनारीश्वर प्रकाशन वाराणसी

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2025